Kaverinadivarnanam

कावेरीनदीवर्णनम्

Document Information

Text title : Kaveri Nadivarnanam

File name : kAverInadIvarNanam.itx

Category : devii, nadI, devI

Location : doc_devii

Proofread by : Prabha Maruvada

Description-comments : Kaveri Stuti Series No. 532 Thanjavur Sarasvati Mahal Series

Latest update : July 7, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

July 8, 2024

sanskritdocuments.org

कावेरीनदीवर्णनम्

(वरदाम्बिकापरिणयचम्पूग्रन्थे)
ततो व्रजन्नेव धरेन्दुरग्रे कवेरकन्यां कलयाञ्चकार ।
भ्रूभङ्गसङ्काशतरङ्गरेखास्फुटघुगङ्गोपरिवासरोषाम् ॥

सान्द्रतर-तट-महीरुहान्तर निपतदरविन्द-बन्धु-मयूख-दण्ड-सन्दित-पर्यन्त-सन्तत-परिवर्तमान जलावर्त-चक्र-निर्वर्तित-बहिर्विस्तृत-बहुविध-कलश-सार्थ-समर्थनीय- शतपत्र-मुकुल-जाल-विचित्राम्, विनिद्राम्भोज-राजि-व्याज-विवर-विराजित-गम्भीरता-निष्पन्द-नीरपुर-विनोदन-साधन- फलकान्तर-तरल-भसल-कुल-नीलमणि-जाल-प्रतिक्षण-निक्षेपणोत्क्षेपण-विधि-लक्षण-पवनवश-क्षुभितावन-मद्विटप-भुज-सलक्ष्मीकोभय- तट-क्षोणीरुहश्रेणिकाम्, सतत-सलिल-वसति-जनित-जडिम-हरण-करण-तरणि-किरण-परिचरण-पर-जल-मानव-माणवकारोहावरोह-सन्दित-पुरन्दर-मणि-सोपान-पडिक्त-बन्धुर-तट-द्वन्द्व-तरु-जालच्छायान्तर-दन्तुरितान्तिक-निरन्तरोन्मीलदूर्मि-सन्ततिम्, तरल-तरङ्गोत्कर-वारि-जात-समुद्धत-पराग-पालि-मेलित-तीर-तल-तरुण-तरुशाखाशय-कुसुम-मञ्जरी-तूर्ण-विकिर्ण पांसु-सन्तति-सन्दर्शित-वसन्त-गन्ध- चूर्ण-मुष्टि-विहाराम्, समीरण-सञ्चरणा-वशविनमदुन्नमदायतावनत-शाखा-पल्लवाञ्चल-समुत्क्षिप्यमाणसलिल पृषत-मेदुरित-विहग-कूजित-मुखरीकृत-तीर-मही-जात-जातानुकृत- समन्त्रोच्चारणप्रोक्षण-परतन्त्र-मुनीन्द्रवृन्दाम्, वृन्दारक-सरणि-सञ्चरण-कन्दलद-

मन्दानन्द-मन्दाकिनी-महीतल-निपातनोदस्त-हस्त-प्रशस्त-
समुल्लोल-कल्लोलाम्, उल्लसदधिकानुराग-निहारगिरि-कुमारिका-
कान्त-पार्श्वद्वय-महेश्वर-वपुरुपमेयोभय-तीर-
भूरुह-च्छाया-मेदुरित-सविध-विमलान्तराल-नीर-पूराम्,
निकटतट-विटपि-निबिड-विटपान्तर-निपात-कठोरकिरण-
किरण-कनकशृङ्खला-सङ्गत-तरङ्ग दोला-लीलायित-
लोल-जालपाद-बालिका-पालिकाम, ध्रुवचरण-परिक्रममाण-
ग्रहतारागणानुकरण-सलिल-भ्रमवश-परिभ्रमच्चक्राङ्ग-
सारस-कारण्डव-मण्डलाम्, निमज्जनियमवज्जन-निःश्रेयस-
श्री-समुद्वाह-महोत्सव-समुचित-विचित्र-मङ्गल-
कलश-जाल-लालनीय-विदलद्दलारविन्द-रसास्वाद-
निमग्नोत्थित-परिभ्रमदिन्दिर-पक्षान्तर-निष्यन्दमान-
मकरन्द-बिन्दु-चन्द्रकित-सौगन्धिक-मुकुल-पङ्क्ति-
बन्धुरिताम्, समुत्तुङ्ग-भङ्ग-महोप-धान-सङ्गत-
शंवर-प्रवाह-वरुण-पङ्कज-महापर्यङ्क-निहित-
वर्तुलबृहदुपबर्हण-स्पृहणीय-मिहिर-बिम्ब-जनित-
सौन्दर्याम्, सान्द्रतर-शकुनि-कुल-कुसुम-भर-तरल-
कोमल-शैवाल-जाल-केशपाश-दर्शनीय-सवन्ती-
कान्त-नितान्त-रति-श्रान्ति-संवेश-पारवश्य-वश-
विशीर्ण-कुश-कौशेय-समुल्लत-सैकत-नितम्ब-
हंस-संसदमल-दुकूल-विधान-सावधान-वीची-भुजा-
विराजिताम्, अनुकूल-निपतदुदभिपतदखिल-जल-विहग-कुल-
गरुदुदरभरित-सलिल-पृषत-निवसित-तट-युगल-
निथत-किसलयित-विटपि-परिषदभिवृत-जलधर-
सरणि-परिहसित-युगपदुदयदुडुगणकनकगिरिशिखर-
परिगत-सुरनगर-तरङ्गिणीम्, प्रकट-विघटमान-
पुटाकिनी-कुसुम-हाटक-भाजन-हरित-मधु-रस-
रसनसमासीन-राजहंस-बिस-सहभोजन-सतत-प्रकाशन-
पेशल-शैशवैः, अभ्याशविलदावन्ती-रभस-विवर्तमान-
शतपत्र-मुकुल-विवर्तक-केलीप्रवर्तक-समीर-कुमारक-
विस्तारित-पाश-नीकाश-रेखाशतैः आकाश-तल-विमलता-
वादासह-सलिल-प्रसाद-रभस-सन्धान-कुतुक-विरचित-

याता-यात-मेघ-पृथु-कोप-मान साधित- साधिमभि,
अभिनव-पद्मिनी-परिषदतिचपल-वीची-भुजा-विराजित-
राजीव- करतलोत्पतनापतन- दर्शनीयकेली- नील-
मणि-घुटिकानुकारिचटुलाकारैः, रसातलोज्जिहान-वाजिनी-नाल-
निभ-व्याल-निरालस्य-नलिन- फण-फलक-विलासमान-
कालिम-मरीचिभङ्ग-शङ्कनीयैः पथोन्तरगत-प्राचेतस-
निकेत-सौध-जलवर्त-वातायन-कन्दलढमन्द-गन्ध-
धूम-बन्धुरैरिंदिन्दिरसद है निरन्तर मुखरित-दिगन्तराम्,
उदारान्त-राल-मेलित-कुमुद-कुवलय-कमल-कुडमल-
शैवाल-जाल-शवलितावर्त-विचित्र-तरारार्तिक-
पात्र-समुल्लसित-हल्लक-कोरक-दीप-कलिकाभिः विजय-
नीराज- नामारचय्य निपतदाभिनव-तट-तरु-कुसुम-
सरस-केसर-विसर- ग्रसन-रस-सर-भस-
सारस-मुख-शकुनि-रसित-विलसितैः उपर्युपरि
समुद्गच्छदूर्मिच्छटाभिरभिसंहिततमं“समागच्छ
विजयस्व” इति समयानुरूपानुलापपुरः सरम्, आत्म-
सैन्यस्य हस्तसञ्ज्ञामिव रचयन्तीम्- पन्नगराजमूर्तिमिव
प्रशास्तपावनवृत्तिम्, शमिजनचित्तवृत्तिमिव
सर्वरसावधीशनिपुणामृतरुचिं शर्वाणीमिव
सह्यगिरीशदृढतररसानुभवां रामकथामिव बहुलहारिलसितां
शैलूषीमिव बहुशास्तरङ्गनटनशोभितां अध्यात्मविद्यामिव
उपनिषदूरपदस्फुटालक्ष्य हंसगतिं प्राज्ञनृपसम्पदमिव
प्रसाधितदक्षिणाशां नीरदमालिकामिव नियतोत्कूलश्यामलतान्वितां
पावनतापहसितजह्नुकुमारी पाथोरसावधूतसुधामाधुरीं पयोधिराज-
प्रधानान्तः पुरीं पातकवातन्धयमयूरीं कावेरीमतारीत् ।

इति कावेरीनदीवर्णनं सम्पूर्णम् ।

Proofread by Prabha Maruvada

Kaverinadivarnanam

pdf was typeset on July 8, 2024

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*